पत्र लेखन - अनौपचारिक पत्र

जन्मदिन पर भेजे गए उपहार के लिए धन्यवाद करने हेतु भाई को पत्र लिखिए।

जैन हायर सैकेण्डरी स्कूल,

दरियागंज, नई दिल्ली।

दिनांक: ....

आदरणीय भाई साहब,

सादर नमस्ते!

कल मुझे आपके द्वारा भेजा गया उपहार एवं पत्र प्राप्त हुआ। पत्र में आपकी कुशलता जानकर अच्छा लगा। मैं भी यहाँ पर कुशलपूर्वक हूँ। आपका दिया गया उपहार देखकर तो मेरी खुशी का ठिकाना ही नहीं था। मैं जानता था कि आपको मेरा जन्मदिन याद होगा। परन्तु उस दिन आप मेरे लिए उपहार भेजेंगे, यह मैंने सोचा भी नहीं था।

आपने जो उपहार भेजा है, वह मेरे लिए अनमोल है। आपके उपहार से आपका मेरे प्रति स्नेह झलकता है। घड़ी की मुझे बहुत आवश्यकता थी। माताजी से मैंने आग्रह किया था कि वह मेरे लिए हाथ में पहनने वाली घड़ी भेज दें परन्तु उन्होंने मना कर दिया। इस घड़ी की सहायता से मैं अपने सारे कार्य निश्चित समय पर कर पाऊँगा। परीक्षा आने वाली हैं, अब मेरी पढ़ाई समय-सारणी के अनुसार हो पाएगी। आप मेरी तरफ़ से निश्चिंत रहिएगा। मैं अपनी पढ़ाई बड़े मन से कर रहा हूँ। माता-पिताजी ने भी अच्छा उपहार भेजा है।

मुझे विश्वास है कि आपके आशीर्वाद एवं अपने परिश्रम से एक दिन मैं बड़ा आदमी बनकर दिखाऊँगा। भाभी को प्रणाम एवं बच्चों को प्यार।

आपका प्यारा भाई,

अंकित

पिताजी को रुपए मँगवाने के लिए पत्र लिखिए।

केन्द्रीय विद्यालय,

विवेक विहार,

नई दिल्ली

www.ncertbooks.net

दिनांक: ....

आदरणीय पिताजी,

सादर प्रणाम!

आपका पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि घर में सभी सदस्य स्वस्थ हैं। मैं भी यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ। बहुत दिनों से घर आने की सोच रहा था। परन्तु परीक्षा परिणाम देखने के लिए रुकना पड़ा। आगे का समाचार यह है कि मेरी परीक्षा का परिणाम आ गया है। आपको यह जानकर अत्यंत खुशी होगी कि मैं अपनी कक्षा में प्रथम श्रेणी में पास हुआ हूँ। मैंने अपनी कक्षा में 95 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। मेरे द्वारा किया गया परिश्रम व्यर्थ नहीं गया है। मेरे मित्रों ने भी द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया है। सभी अध्यापक मेरे परीक्षा परिणाम से बहुत प्रसन्न हैं।

मैं अब नौवीं कक्षा में आ गया हूँ। अगले महीने से हमारी नौवीं की कक्षा आरंभ होने वाली है। इसलिए अपनी नई कक्षा के लिए मुझे किताबें, कापियाँ एवं वर्दी खरीदनी है। अध्यापिका द्वारा हमें तीन महीने की फीस भी भरने को कहा गया है। उनके अनुसार जितनी जल्दी हो सके किताबें, कापियाँ एवं वर्दी आ जानी चाहिए। आपने इस महीने के खर्च के जो पैसे दिए थे, वे खत्म होने वाले हैं।

अत: आपसे निवेदन है कि कृपा करके चार हज़ार रुपए का इंतज़ाम कर, डाक द्वारा शीघ्र भिजवा दें।

अब पत्र समाप्त करता हूँ। माताजी को प्रणाम कहिएगा एवं सोनाक्षी को प्यार। पत्र अवश्य लिखते रहिएगा। आपके पत्र का इंतज़ार रहेगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,

अभिषेक

फ़िज़ूलखर्च पर भाई को समझाते हुए पत्र लिखिए।

वसुंधरा

गाजियाबाद (उ.प्र)

दिनांक: ....

प्रिय अनुपम,

बहुत प्यार!

मैं तुम्हें बहुत समय से पत्र लिखना चाह रहा था। परन्तु व्यस्त होने के कारण नहीं लिख पाया। आज ही तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। पत्र में तुमने पाँच हज़ार रुपए भिजवाने का आग्रह किया है। पिछले हफ़्ते ही

पिताजी द्वारा तुम्हें दो हज़ार रुपए भिजवाए गए थे। ये रुपए इतनी जल्दी कैसे खत्म हो गए? तुम्हें अपनी फ़िज़ूलखर्ची पर नियंत्रण करना चाहिए।

अपने घर की आर्थिक स्थिति से तुम भली-भांति परिचित हो। तुम्हें ये पता होना चाहिए कि पिताजी हमारी पढ़ाई के लिए दिन-रात परिश्रम करके पैसे इकट्ठा करते हैं। हमें चाहिए कि ज़रुरत के अनुसार पैसे खर्च करें। अधिक धन खर्च करने से तुम्हारी आदतें भी खराब हो सकती हैं। बिना वजह पैसों का अपव्यय करना अच्छी बात नहीं है। विद्यार्थी का लक्ष्य होता है, विद्या प्राप्त करना।

अत: मेरा यह परामर्श है कि इधर-उधर की बातों में अपना ध्यान न लगाकर तुम मन लगाकर पढ़ाई करो ताकि माता-पिता का नाम रौशन कर सको। तुम्हारा यह व्यवहार उन्हें निराशा से भर देगा। अभी तो तुम्हारी आवश्यकता के लिए दो हज़ार रुपए भिजवा रहा हूँ। परंतु आगे से ध्यान रखना।

तुम्हारा शुभचिंतक,

विशाल

बड़े भाई को राखी भेजते हुए तथा उपहार के लिए धन्यवाद देते हुए पत्र लिखिए।

ए-ब्लॉक, 479,

नेताजी नगर, नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्यारे भईया,

नमस्कार!

आपका भेजा हुआ उपहार कल प्राप्त हुआ। आपने उपहार स्वरुप मेरे लिए जो सूट भिजवाया है। वह बहुत प्यारा है। आपको याद रहा पिछले वर्ष मैंने आपसे सूट की माँग की थी। मेरी इच्छा आपने याद रखी। उपहार देखकर मन गदगद हो उठा। आपका भेजा हुआ सूट बहुत प्यारा है। मैं आपको पत्र के साथ राखी भेज रही हूँ।

भईया इस बार आप राखी में नहीं आ पाओगे, यह सोचकर मन बहुत दुखी है। आपने उपहार भी पहले भिजवा दिया है। इससे आपके आने की जो आस थी, वह भी समाप्त हो गई। राखी पर न आने के लिए मैं आपसे नाराज़ हूँ। यह पहला अवसर है जब आप राखी में हमारे साथ नहीं होगे। इस वर्ष आपको डाक से राखी भेजनी पड़ रही है।

इसे निश्चित दिन पर अपनी कलाई पर बाँध लेना। राखी भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक है। इस राखी के साथ छोटी बहन का प्रेम व शुभकामनाएँ बंधी है। यह राखी, आपके जीवन में आने वाली हर परेशानी से रक्षा करे, यही एक बहन की कामना है। पत्र समाप्त करती हूँ। अपनी बहन के पत्र का उत्तर शीघ्र देना।

www.ncertbooks.net

आपकी छोटी बहन,

मिष्टी

समय का सदुपयोग और परिश्रम पर बल देते हुए छोटे भाई को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,

दिनांक: ....

प्रिय भाई निखिल,

शुभ आशीर्वाद!

कल पिताजी का पत्र मिला। पढ़कर यह पता चला कि इस वर्ष परीक्षा में तुम्हें बहुत कम अंक प्राप्त हुए हैं। तुम तो बहुत कुशाग्रबुद्धि हो। तुमने हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। तो इस बार ऐसा क्या हुआ जो तुम्हें इतने कम नंबर प्राप्त हुए हैं। अवश्य ही तुमने इस बार पढ़ाई में परिश्रम नहीं किया होगा। जीवन में यदि सफल होना चाहते हो, तो समय का सदुपयोग कर परिश्रम करो। किया हुआ परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता है।

विद्यार्थी के जीवन में समय और परिश्रम का बहुत महत्व होता है। यदि परिश्रम किया गया हो, तो उसका फल अच्छा ही होता है। इस संसार में समय से अधिक बलवान और कोई नहीं है। एक बार अगर समय हाथ से निकल गया तो कुछ नहीं कर पाओगे। तुम्हारे लिए यह परिश्रम करने का समय है। इस समय को व्यर्थ न जाने दो। एक-एक क्षण मूल्यवान होता है। उसके मूल्य को पहचानकर उसका सही उपयोग करो। फिर देखो तुम्हें सफल होने से कौन रोक सकता है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि तुम समय के महत्व को समझोगे तथा पूरी मेहनत से तैयारी करोगे। अगामी परीक्षा में तुम मेरी बात को ध्यान में रखते हुए बहुत परिश्रम करोगे व अच्छे अंक प्राप्त करोगे।

तुम्हारा भाई,

मोहन शर्मा

धूम्रपान करने वाले भाई को इसके दोषों का उल्लेख करते हुए पत्र लिखिए।

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय कमल,

www.ncertbooks.net

बहुत स्नेह!

तुमसे बहुत दिनों से सम्पर्क न होने के कारण तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। कुछ समय पहले मेरी मुलाकात तुम्हारे करीबी मित्र से हुई। उसके द्वारा मुझे ज्ञात हुआ कि तुमने धूम्रपान करना आरम्भ कर दिया है। यह जानकर मुझे बहुत कष्ट हुआ।

तुम एक बुद्धिमान व समझदार विद्यार्थी हो। तुम्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि धूम्रपान करने से बहुत तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ता है। धूम्रपान करने से व्यक्ति के फेफड़ों में बीमारियों का खतरा बना रहता है। जिससे तपेदिक (टी.बी) व दमा जैसी बीमारियाँ शरीर में घर बना लेती हैं। आरंभ में तुम्हें इसके दुषपरिणाम नजर नहीं आएँगे परन्तु धीरे-धीरे यह तुम्हारे शरीर व जीवन को खोखला बना देगा। तुम्हारे इस कार्य से माता-पिता को भी बड़ा दुख होगा। अत: तुम्हें चाहिए कि तुम इस व्यसन को छोड़ दो। इस व्यसन को छोड़ने के लिए सुबह उठकर व्यायाम व योगा करो। संयम से काम लो तभी तुम स्वयं का हित कर पाओगे।

योगा तुम्हारा मनोबल बढ़ाएगा तथा व्यायाम से तुम स्वयं को तरोताज़ा महसूस करोगे। व्यायाम व योगा से धूम्रपान का दुष्प्रभाव भी कम हो जाता है। सही समय पर उठाया गया कदम जीवन को नई दिशा देता है। मैं आशा करता हूँ कि तुम अपने बड़े भाई की बात मानते हुए दुबारा धूम्रमान नहीं करोगे।

तुम्हारा बड़ा भाई,

रवि

विद्यालय के वार्षिक उत्सव में पिताजी को बुलाने के लिए पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,

दिनांक: ....

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम!

आज ही आपका पत्र मिला। हालचाल मालूम हुआ। मैं यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ। पिछले महीने मेरी परीक्षाएँ चल रही थीं। इसलिए मैं पढ़ाई में व्यस्त थी और आपको पत्र नहीं लिख सकी। परीक्षा परिणाम आ गया है। मैंने पूरे विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अब हमारे यहाँ वार्षिकोत्सव की तैयारी आरंम्भ हो गई है। जैसा आपको पता है हर साल की तरह इस साल भी वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। इस बार मैं भी इसमें भाग ले रही हूँ और साथ ही इस बार मुझे 'सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी' का पुरस्कार मिलेगा।

यह पुरस्कार मेरे लिए बहुत महत्व रखता है। मैंने पूरे वर्ष बिना कोई अवकाश लिए अपना सत्र पूरा किया था। अपने हर विषय में पूरी ईमानदारी से परिश्रम किया और अच्छे अंक प्राप्त किए। अपने व्यवहार से

www.ncertbooks.net

अध्यापकों का दिल जीत लिया। इसलिए मुझे विद्यालय की तरफ़ से 'सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी' का पुरस्कार मिल रहा है।

अत: मैं चाहती हूँ कि इस शुभ अवसर पर आप भी आएँ और मुझे देखें। आप ज़रूर आइएगा। यहाँ रहने की भी उचित व्यवस्था की गई है। आपको कोई परेशानी नहीं होगी। आप आएँगे तो मेरा मनोबल बढ़ेगा। माताजी को मेरा प्रणाम कहिएगा।

आपकी पुत्री,

किन्नी

पर्वतारोहण का प्रशिक्षण लेने के लिए पिताजी से अनुमति माँगने हेतु पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,

दिनांक: ....

आदरणीय पिताजी,

सादर चरण स्पर्श!

आज आपका पत्र मिला। आप सब वहाँ कुशलपूर्वक हैं, यह जानकर अच्छा लगा। मैं आगामी परीक्षा की तैयारियों में व्यस्त था इसलिए आपको पत्र नहीं लिख सका। आज ही मेरी वार्षिक परीक्षाएँ समाप्त हुई हैं। विद्यालय की ओर से कुछ दिनों पश्चात् हिमाचल प्रदेश में एक पर्वतारोहण का प्रशिक्षण देने के लिए शिविर लग रहा है। आप जानते हैं, मैं इस तरह के प्रशिक्षण लेने के लिए पहले से ही इच्छुक था।

हमारे विद्यालय ने यह अवसर देकर मेरे मन की मुराद पूरी कर दी है। अत: मैं भी उसमें भाग लेना चाहता हूँ। इससे मुझे पर्वतारोहण प्रशिक्षण मिलेगा और साथ ही हिमाचल के आसपास के क्षेत्रों में घूमने का अवसर भी मिलेगा। यह शिविर जहाँ मेरे आत्मविश्वास को बढ़ाएगा, वहीं मुझे अन्य स्थानों को देखने और समझने का अवसर भी देगा।

कृपया इसके लिए मुझे अपनी अनुमति दे दीजिए ताकि मैं अपनी रुचि को पूरा कर सकूँ। आपका सहयोग मेरे लिए महत्वपूर्ण है।

घर में सभी बड़ों व माताजी को मेरा प्रणाम कहिएगा तथा छोटों को प्यार। आशा है आप मुझे अनुमति अवश्य देगें। मुझे आपके पत्र का इंतजार रहेगा।

आपका पुत्र,

नीरज

www.ncertbooks.net

चिन्तित माँ को अपनी कुशल-क्षेम बताने हेतु पत्र लिखिए।

छात्रावास,

शिमला,

दिनांक: ....

पूज्य माताजी,

सादर प्रणाम!

कल आपका पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि घर में सब कुशलमंगल है। मैं भी आप सबके आशीर्वाद से कुशलमंगल हूँ। आपके पत्र से मुझे ज्ञात हुआ कि आप मेरे लिए बहुत चिन्तित रहती हैं। माँ आपके स्वास्थ्य के लिए यह ठीक नहीं है।

मेरा छात्रावास बहुत अच्छा है। यहाँ पर बहुत बड़ा भोजनालय है। जहाँ पर तीनों समय हमारे लिए भोजन पकाया जाता है। सुबह नाश्ते में हमें पोहा, दूध, एक अंडा परोसा जाता है। दोपहर में दाल-चावल और रायता परोसा जाता है और रात के समय भोजन में दाल, चावल, रोटी, सलाद व एक सब्जी परोसी जाती है। हमारे वोर्डन बहुत ही अच्छे व्यक्ति हैं। वह हमारे साथ हमेशा प्यार से रहते हैं। छात्रावास में दो अन्य मित्रों के साथ रहता हूँ। हमारा कमरा बहुत ही साफ़-सुथरा व हवादार है। बिजली चौबीसों घंटे रहती है। छात्रावास के नजदीक ही चिकित्सालय की सुविधा है। स्कूल में भी सभी तरह की सुविधाएँ उपलब्ध है। वहाँ सभी अध्यापक और अध्यापिकाएँ बहुत अच्छे हैं। मित्रों के साथ दिन कैसे निकल जाता है पता ही नहीं चलता।

अत: आपसे अनुरोध है कि मेरी चिन्ता करना छोड़ कर स्वयं का ध्यान रखिए। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ यदि कोई परेशानी होगी तो मैं आपको अवश्य बताऊँगा। पत्र समाप्त करता हूँ। घर में पिताजी व दादाजी को चरण-स्पर्श कहिएगा और नेहा को प्यार।

आपका पुत्र,

विशाल

भाई की पुरस्कार स्वरुप मोटर-साइकिल की अनुचित मांग पर उसे समझाते हुए पत्र।

987-बी, झिलमिल कॉलोनी,

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

www.ncertbooks.net

प्रिय भाई दिलीप,

बहुत स्नेह!

कल पिताजी का पत्र मिला। मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि अपने विद्यालय में तुमने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। तुम्हारी यह सफलता हमारे लिए गौरव की बात है। यह तुम्हारे कठोर परिश्रम और प्रयास का फल है। तुम्हारी इस अपार सफलता के लिए मैं तुम्हें दिल से बधाई देती हूँ।

पत्र पढ़कर मुझे ज्ञात हुआ कि तुम उनसे उपहार स्वरुप मोटरसाइकिल की मांग कर रहे हो। मैं यह मानती हूँ कि पिताजी ने तुम्हें मनोवांछित उपहार देने का वादा किया था, यह सही भी है। लेकिन तुमने उनसे जो उपहार माँगा है, वह सही नहीं है। तुम अभी मात्र 13 वर्ष के हो। वाहन चालने की जो उम्र निश्चित की गई है, वह 18 वर्ष है। तुम्हें वाहन चलाने का ड्राइविंग लाइसेंस भी 18 वर्ष में ही प्राप्त होगा। यदि इससे पहले तुम वाहन चलाते हो तो यह अपराध माना जाएगा और इसके लिए तुम्हें दण्डित भी किया जा सकता है। कम उम्र में वाहन चलाना तुम्हारे लिए भी जानलेवा हो सकता है।

वाहन चलाने के लिए तुम्हें कुछ वर्ष और इंतजार करना पड़ेगा। इसके बदले तुम पिताजी से अन्य उपहार की माँग कर सकते हो। तुम्हारी इच्छा को वह अवश्य पूरा करेंगे। आशा करती हूँ, तुम मेरी बात को समझ गए होगें तथा मोटरसाइकिल लेने वाली जिद्द को छोड़ दोगे। घर में माता-पिताजी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारी बहन,

शिखा

शैक्षिक भ्रमण के लाभ कैसे उठाएँ यह समझाने हेतु बहन को पत्र लिखिए।

4, शान्ति निकेतन,

नई दिल्ली-21

दिनांक: ....

प्रिय बहन नीला,

बहुत प्यार!

माताजी के द्वारा मुझे ज्ञात हुआ कि तुम गर्मियों की छुट्टियों में विद्यालय की तरफ़ से शैक्षिक भ्रमण के लिए जा रही हो। यह जानकर बहुत अच्छा लगा। वहाँ जाने से पहले मैं तुम्हें कुछ सुझाव देना चाहती हूँ जो तुम्हारे इस भ्रमण में लाभकारी सिद्ध होगें।

यह भ्रमण तुम्हारे लिए बहुत अच्छा मौका है, आगे चलकर इसका लाभ तुम्हें भविष्य में अवश्य मिलेगा। तुम अपना समय यहाँ-वहाँ व्यर्थ घूमने में बर्बाद मत करना। याद रखना यह तुम्हारे लिए बहुत बहुमूल्य मौका

www.ncertbooks.net

है। ऐसे अवसर विद्यार्थी जीवन में बहुत कम ही आते हैं। तुम जिस भी स्थान में जाओ वहाँ के विषय में पूरी जानकारी हासिल करना। ये जानकारियाँ फिर चाहे ऐतिहासिक हो, जन-जीवन से संबंधित हो, संस्कृति के बारे में हो, वहाँ की सामाजिक और राजनैतिक उथल-पुथल से जुड़ी हुई हो। पूरे ध्यान से और लगन से इन जानकारियों पर नोट्स बनाना। आगे चलकर यह सामग्री तुम्हारे अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण साबित होगीं।

आशा करती हूँ तुम मेरे सुझावों पर ध्यान दोगी और इस भ्रमण का पूरा लाभ उठाओगी। मेरी तरफ़ से यात्रा के लिए ढेरों शुभकामनाएँ।

तुम्हारी बहन,

कविता

मित्र को छुट्टियों में अपने घर बुलाने के लिए पत्र लिखिए।

एंग्लो संस्कृत स्कूल,

दरियागंज, नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय मित्र,

बहुत प्यार!

तुम्हारा हालचाल काफ़ी समय से नहीं मिला और मुलाकात भी नहीं हुई। अत: तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। आशा करता हूँ कि तुम अपने परिवार सहित कुशलतापूर्वक होगें। मित्र मैं तुम्हें मिलने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। मेरी परीक्षाएँ समाप्त हो गई हैं। आशा है तुम्हारी परीक्षाएँ भी समाप्त हो गई होंगी। इस बार मेरे परीक्षा में अच्छे अंक आएँगे, मैंने काफी मेहनत की है। तुम्हारी परीक्षाएँ कैसी हुई हैं?

पत्र लिखने का एक कारण और था। तुम दिल्ली कब आ रहे हो। मेरे माता-पिता ने छुट्टियों में मसूरी जाने का कार्यक्रम बनाया है। तुम भी आ जाओ तो साथ-साथ हिल स्टेशन का मज़ा लेंगे। पिताजी ने स्वयं तुम्हें साथ लेने के लिए कहा है। वह तुम्हारे पिताजी से बात कर लेगें। मसूरी का सौंदर्य तो देखने लायक होता है। मॉल रोड़, कैम्टी फ़ाल, कंपनी गार्डन आदि जैसी जगहें हैं, जिन्हें देखने के लिए लोग दूर-दूर से यहाँ आते हैं। वहाँ हम दोनों खुब घूमेंगे-फिरेंगे और मौज-मस्ती करेंगे।

दिल्ली आते ही घर पर मिलना, फिर मसूरी जाने का कार्यक्रम बनाएँगे। अपने पापा-मम्मी को मेरा प्रणाम कहना। इस विषय में तुमने क्या सोचा है, पत्र लिखकर ज़रूर बताना।

तुम्हारा मित्र,

राजन

www.ncertbooks.net

अपनी मित्र की माताजी की असामयिक मृत्यु पर एक संवेदना पत्र लिखिए।

क.ख.ग.

दिनांक: ....

प्रिय कमला,

नमस्कार!

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। तुम्हारी माताजी की अकस्मात मृत्यु की ख़बर पढ़कर अत्यंत दुख हुआ। तुम घर में सबसे बड़ी हो सो धैर्य के साथ अपने परिवार के सदस्यों को संभालना तुम्हारी ज़िम्मेदारी बनती है। आगे घर भी तुम्हें ही संभालना है। तुम्हारी माताजी बहुत ही स्नेही व दयालु स्वभाव की थीं। उनसे मुझे भी विशेष लगाव था। परन्तु मृत्यु के आगे किसी का भी ज़ोर नहीं चलता, यह सब ईश्वर की इच्छानुसार होता है।

हर व्यक्ति जो इस संसार में आया है, उसको एक-न-एक दिन तो जाना ही पड़ता है। कुछ लोग जल्दी या कुछ लोग देर से जाते हैं। तुम्हें अपना जीवन नए सिरे से शुरु करना पड़ेगा। बड़ों की तरह बुद्धिमत्ता से घर के सभी कार्यों को करना और समस्याओं को सुलझाना भी पड़ेगा।

आगे तुम समझदार हो, पिताजी एवं भाई को इस दुखद परिस्थिति में धीरज देना। इस दुख के समय मेरा तुम्हारे पास होना बहुत आवश्यक था। लेकिन किसी कारणवश में तुम्हारे साथ नहीं हूँ, इसके लिए क्षमा चाहती हूँ। मैं छुट्टियों में तुमसे आकर मिलूँगी। सभी बड़ों को प्रणाम एवं छोटों को प्यार कहना।

तुम्हारी सखी,

अरूणा

अपने जन्मदिन के अवसर पर अपने मित्र को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।

4/36, विवेक विहार,

दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय मित्र कपिल,

सादर नमस्कार!

बहुत समय हुए तुमसे मुलाकात नहीं हो पाई है। ऐसे अवसर की तलाश थी जिससे तुम्हें मिला जा सके। पत्र लिखने का कारण यह है कि आगामी माह में मेरा जन्मदिन है।

www.ncertbooks.net

इस बार माताजी ने निश्चय किया है कि मेरा जन्मदिन बड़े धूमधाम से मनाया जाए। इस अवसर पर उन्होंने एक समारोह का आयोजन किया है। बड़ी मुश्किल से तुमसे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ है। मैं, तुम्हें इसमें भाग लेने के लिए सप्रेम आंमत्रित करता हूँ। समारोह का कार्यक्रम इस प्रकार है-

रात आठ बजे .... नृत्य कार्यक्रम

रात नौ बजे .... केक काटने की रस्म

रात्रि नौ दस बजे .... भोज प्रारंभ

मित्र आशा करता हूँ कि तुम इस अवसर पर सपरिवार ज़रूर आओगे। मुझे तुम्हारा इंतजार रहेगा। घर में बड़ों को प्रणाम कहना एवं छोटों को प्यार।

तुम्हारा परम मित्र,

कवि

बड़े भाई के विवाह में सम्मिलित होने के लिए मित्र को निमंत्रण-पत्र लिखिए।

315, लक्ष्मी नगर,

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय मित्र जावेद,

बहुत प्यार!

बहुत दिनों से तुम्हें पत्र लिखना चाह रहा था। परन्तु व्यस्तता के कारण नहीं लिख पा रहा था। घर में भईया के विवाह की तैयारियों में लगा हुआ था। तुम्हें पत्र लिखने के पीछे यही कारण था। तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरे बड़े भाई विमल का विवाह दिनांक ....को होना निश्चित हुआ है।

तुम मेरे परम मित्र हो, अत: इस अवसर में तुम्हें सादर आमंत्रित करता हूँ। बारात हमारे निवास स्थान से सात बजे सांयकाल गुड़गाँव के लिए प्रस्थान करेगी।

विवाह का कार्यक्रम इस प्रकार है-

सेहरा बँधी .... 15 मार्च सायं 6 बजे

बारात प्रस्थान .... 15 मार्च सायं 7 बजे

www.ncertbooks.net

प्रीतिभोज .... 15 मार्च रात्रि 8 बजे

विदाई .... 16 मार्च प्रात: 5 बजे

तुम विवाह से दो दिन पहले ही आ जाना और मेरे साथ रहकर विवाह के कार्यों आदि में मेरा हाथ बटाना। इस अवसर पर मुझे मेरे परम मित्र की बहुत आवश्यकता है। आशा है कि तुम सपरिवार सहित इस अवसर पर ज़रूर आओगे। पत्र समाप्त करता हूँ। अपने आने का कार्यक्रम पत्र द्वारा अवश्य बताना। तुम्हारे पत्र का इंतजार रहेगा।

तुम्हारा परम मित्र,

राजीव

अपने मित्र को कुमित्रों से सावधान करते हुए पत्र लिखिए।

4/37, जनकपुरी,

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय अमन,

सप्रेम नमस्ते!

कल तुम्हारे भाई से मुलाकात हुई। उससे ज्ञात हुआ कि आजकल तुम्हारा मन पढ़ाई में न लगकर अवारा लड़कों के साथ यहाँ-वहाँ घूमने में लगता है। इसके लिए तुम्हें विद्यालय की तरफ़ से भी सचेत किया जा चुका है। उनके साथ सारा समय नष्ट करने के कारण तुम परीक्षा में भी अनुत्तीर्ण हुए हो। तुम्हारे इस कार्य से घर में सभी तुमसे दुखी हैं।

मित्र ध्यान रखना तुम्हारे ये कुमित्र तुम्हें कहीं का नहीं छोड़ेंगे। बुरी संगति मनुष्य को ले डुबती है। यदि मित्र अच्छा हो तो जीवन संवर जाता है और यदि मित्र बुरा हो तो जीवन नरक से भी बुरा हो जाता है। विद्वानों ने सही कहा है, 'जीवन में अच्छी संगति का बहुत महत्व होता है।' एक मित्र अच्छा हो तो सही मार्गदर्शन कर हमें सफलता के शिखर पर ले जाता है। हमें चहिए अच्छे लोगों से मित्रता करें।

तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हें पढ़ने के लिए शिमला के सबसे अच्छे विद्यालय में भेजा है ताकि तुम्हारा भविष्य संवर सके। परन्तु तुम्हारे इस व्यवहार से वे बहुत चिन्तित हैं। मुझे आशा है, तुम कुसंगति से अपना मन हटाकर पढ़ाई में ध्यान लगाओ।

तुम्हारा शुभचिंतक,

www.ncertbooks.net

विपिन

मित्र को वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने पर बधाई पत्र लिखिए।

28, मालवीय नगर,

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय शोभना,

मधुर स्नेह!

कल तुम्हारा पत्र मिला। मुझे यह समाचार पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि तुम दिल्ली के सभी विद्यालयों के बीच हुई वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम चुनी गई। तुम्हारी यह सफलता प्रशंसा के योग्य है। मुझे तुमसे यही आशा थी।

तुम हमेशा से ही बहुत कुशाग्रबुद्धि रही हो। हर विषय में तुम्हें गहरी जानकारी प्राप्त है। पहले भी तुम विद्यालय में हुए, वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुकी हो। परंतु दिल्ली के सभी विद्यालयों में प्रथम स्थान पाना, बड़े सम्मान की बात है। तुम्हारे माता-पिता तो फूले नहीं समा रहे होगें। यहाँ पर तुम्हारे सभी मित्रगण भी तुम्हारी इस सफलता पर बहुत ख़ुश हैं।

मेरे माता-पिता ने भी तुम्हें शुभकामनाएँ व आशीर्वाद भेजा है। भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि तुम इसी तरह अपने जीवन में सफलता प्राप्त करती रहो और अपने परिवार का नाम रौशन करो। तुम्हारी तरफ़ से मिठाई उधार रही। अपने माता-पिता को मेरा नमस्कार कहना। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा रहेगी। पत्र अवश्य लिखना।

तुम्हारी सखी,

रमा

शिमला में हमउम्र बच्चे द्वारा की गई सहायता का धन्यवाद करने हेतु पत्र लिखिए।

ए-32/1, ओखला,

नई दिल्ली।

तिथि: ....

प्रिय नैना,

www.ncertbooks.net

बहुत प्यार!

आशा है कि तुम शिमला में कुशलमंगल होगीं व शिमला के सुंदर वातावरण के मज़े ले रही होगीं। मैं कुशलतापूर्वक दिल्ली पहुँच गई हूँ। दिल्ली पहुँचकर सर्वप्रथम तुम्हें पत्र लिख रही हूँ। दिल्ली में अत्यधिक गर्मी पड़ रही है। शिमला की रह-रहकर याद आती है।

मैं तुम्हारा हार्दिक धन्यवाद करना चाहती हूँ यदि तुम मेरे साथ नहीं होती तो मैं शिमला जैसे अंजान स्थान को जान नहीं पाती। तुम्हारी सहायता के कारण ही मैं वहाँ के स्थानों और इतिहास को इतनी भली-भाँति से जान व समझ पाई हूँ। तुम्हारी सहायता के कारण मुझे शिमला में किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ा। तुमने और तुम्हारे परिवार ने वहाँ पर मेरा अपने परिचित की भांति ही ध्यान रखा। तुम्हारी सहायता के लिए मैं तुम्हारी सदैव आभारी रहूँगी।

नैना यदि कभी तुम्हें दिल्ली भ्रमण का मन हो तो मेरा आग्रह है, तुम मेरे घर पर ही आकर रुकना। तुम्हें दिल्ली भ्रमण कराने की सारी ज़िम्मेदारी मुझे ही देना। मेरे परिवार को तुमसे मिलकर बहुत अच्छा लगेगा। अपने माता-पिता को मेरा चरण-स्पर्श कहना। पत्र लिखते रहना। मैं तुम्हारे पत्र की प्रतिक्षा करूँगी।

तुम्हारी सहेली,

सावित्री

अपने मित्र को विद्यालय की विशेषताएँ बताते हुए पत्र लिखिए।

बिशप कॉटन स्कूल,

छात्रावास,

शिमला।

दिनांक: ....

प्रिय मित्र विक्रम,

स्नेह!

कल तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। तुमने मुझसे मेरे विद्यालय के बारे में पूछा था। तुम्हारे प्रश्न का उत्तर में अपने इस पत्र में दे रहा हूँ।

मेरा स्कूल 'बिशप कॉटन स्कूल' के नाम से जाने जाता है। यह शिमला के बेहतरीन स्कूलों में से एक है। इस स्कूल में लोकप्रिय लेखक 'रस्किन बॉन्ड' ने चौथी कक्षा तक पढ़ाई की थी। मेरा स्कूल एशिया के सबसे पुराने बोर्डिंग स्कूलों में से एक है। इसको स्थापित हुए 152 साल हो गए हैं।

www.ncertbooks.net

हमारा विद्यालय अपने उच्च शैक्षिक स्तर और अनुशासन के लिए प्रसिद्ध है। यह शिमला की सुंदर वादियों में स्थित है। यह ऐसा पहला स्कूल है, जिसने भारत में संगठित स्तर पर खेल-कूद प्रतियोगिताओं की 'प्रीफेक्ट सिस्टम' और 'हाउस सिस्टम' का आरंभ तब किया था, जब वह इंग्लैंड में अस्तित्व में आई थीं। हमारा विद्यालय बहुत बड़ा है। हमारे विद्यालय में छात्रावास की भी व्यवस्था है।

मेरे विद्यालय के अध्यापक व अध्यापिकाएँ बहुत स्नेही स्वभाव के हैं। हमारे विद्यालय के अध्यापक व अध्यापिकाएँ सभी विद्वान हैं। हमारे विद्यालय का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत आता है।

आशा करता हूँ कि तुम मेरे विद्यालय से भली-भांति परिचित हो गए हो। कभी तुम्हारा शिमला आना हो तो मुझसे अवश्य मिलना। मैं तुम्हें अपना विद्यालय अवश्य दिखाऊँगा।

तुम्हारा मित्र,

राजीव

दुर्घटनाग्रस्त मित्र से हाल-समाचार जानने के लिए पत्र लिखिए।

345, मोती नगर,

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय मित्र आकाश,

बहुत स्नेह!

कल कोमल से तुम्हारी कार-दुर्घटना का समाचार सुना, जिसे सुनकर मन विचलित हो गया। उसने बताया तुम अपने नाना के घर कार से परिवार सहित हरिद्वार जा रहे थे कि एक दूसरी कार के ओवर टेक करने के कारण तुम्हारी कार-दुर्घटना ग्रस्त हो गई।

तुम घायल हो गए हो और कार में बैठे बाकी सदस्यों को मामूली चोटें आई हैं। उसने बताया कि तुम्हारे सर पर चोट आई है और एक पैर की हड्डी टूट गई है। तुम्हारी दशा का सुनकर मन घबरा गया। यह समाचार सुनकर मेरे माता-पिता भी घबरा गए थे।

भगवान की कृपा है कि घर के सभी सदस्य और तुम सही-सलामत हो। मित्र बस धीरज से काम लेना और भगवान का धन्यवाद करना, उसने बड़ी दुर्घटना होने से बचा लिया। घर पर बैठकर आराम करो। समय पर दवाइयाँ लेते रहना और खाने-पीने का विशेष ध्यान रखना। समय-समय पर चिकित्सक से जाँच अवश्य करवाते रहना।

www.ncertbooks.net

समय मिलते ही मैं तुमसे मिलने आऊँगा। पत्र समाप्त करता हूँ। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना और अपना ध्यान रखना। पत्र लिखकर अपना हाल-समाचार बताते रहना।

तुम्हारा परम मित्र,

गगन

www.ncertbooks.net